आरती
श्री गणेश जी
की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।। **जय गणेश ....**
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।। **जय गणेश ....**
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। **जय गणेश ....**
हार चढ़ै, फूल चढ़ै और चढ़े मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे, सन्त करें सेवा।। **जय गणेश ....**
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।। **जय गणेश ....**

श्री गणेश वन्दना

वर्णनामर्थसंघानाम् रसानाम् छन्दसामपि। मंगलानाम् च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।
गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बू फल चारु भक्षणम् उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।

आरती
श्री लक्ष्मी जी
की

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत, हर–विष्णु–धाता ।।ॐ
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग–माता।
सूर्य–चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ॐ
दुर्गारूप निरंजनि सुख–सम्पत्ति–दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि–सिद्धि–धन पाता।।ॐ
तुम पाताल–निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव–प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता।।ॐ
जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता।।ॐ
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान–पान का वैभव, सब तुम से आता।।ॐ
शुभ–गुण–मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि–जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता।।ॐ
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।ॐ

श्री लक्ष्मी–वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

आरती
श्री सरस्वती जी
की

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्‌गुण वैभव शालिनि, त्रिभुवन विख्याता।।
चन्द्रवदनि पद्‌मासिनि, द्युति मंगलकारी।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी।। **मैया जय ....**
बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला।। **मैया जय....**
देवि शरण जो आए, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया।। **मैया जय ....**
विद्या ज्ञान प्रदायिनि ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह, अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो।। **मैया जय ......**
धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो।
ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो।। **मैया जय ....**
माँ सरस्वती की आरती, जो कोई नर गावे।
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे।। **मैया जय ....**

आरती
श्री रामचंद्र जी
की

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम्।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरम्।
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनम्।।
मन जाहि राचेऊ मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो।।
एहि भांति गौरि असीस सुन सिय हित हिय हरषित अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि–पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

आरती
श्री हनुमान जी
की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग–दोष जाके निकट न झांकै।।
अंजनी पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिय सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सज़ीवन प्रान उबारे।।
पैठि पताल तोरि जम–कारे। अहिरावण की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परमपद पावै।।

श्री हनुमत्–वन्दना

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

आरती **श्री शिव जी** की

जय शिव ओंकारा, प्रभु जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगनी धारा।। **हर हर महादेव**
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
हँसासन गरूड़ासन, वृषवाहन साजे।। **हर ....**
दो भुज चार चतुर्भुज, दशमुख अति सोहै।
तीनहु रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे।। **हर ....**
अक्षमाला वनमाला, मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृग मद सोहे, भोले शशिधारी।। **हर ....**
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे।
ब्रह्मादिक सनकादिक, भूतादिक संगे।। **हर ....**
कर के मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी, दुःखहारी जग पालनकारी।। **हर ....**
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका।। **हर ....**
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे।। **हर ....**

आरती
श्री सत्यनारायण जी
की

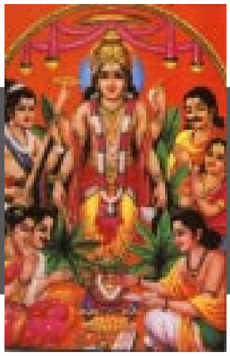

जय लक्ष्मी रमणा, श्री जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन–पातक हरणा।।
रत्न जड़ित सिंहासन, अद्‌भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजे।।
प्रगट भए कलि कारण द्विज को दरश दियो।
बूढो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो।।
दुर्बल भील कबरो, इन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपति हरी।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभु जी, फिर स्तुति कीन्हीं।।
भावभक्ति के कारण, छिन–छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सर्‌यो।।
ग्वाल–बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयाल हरी।।
चढ़त प्रसाद सवाया, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।।
श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावे।
ऋद्धि–सिद्ध सुख–सम्पत्ति मनवाँछित पावे।।

आरती
श्री संतोषी मां
की

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता।
अपने सेवक जन की सुख सम्पत्ति दाता।। **जय..........**

सुन्दर चीर सुनहरी, माँ धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमके, मन श्रृंगार लीन्हों।। **जय..........**

गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मंद हँसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे।। **जय..........**

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चँवर ढुरें प्यारे।
धूप, दीप, मधु मेवा, भोग धरें न्यारे।। **जय..........**

गुड़ अरु चना परम प्रिय, तामें सन्तोष कियो।
सन्तोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो।। **जय..........**

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही।। **जय..........**

मन्दिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें हम बालक चनन सिर नाई।। **जय..........**
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै।
जो मन बसै हमारे, इच्छित फल दीजै।। **जय..........**

दुःखी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किये।
बहु धन–धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये।। **जय..........**

ध्यान धर्‌यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनन्द आयो।। **जय..........**

शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे।
संकट तूही निवारे, दयामयी अम्बे।। **जय..........**

सन्तोषी माँ की आरती, जो कोई नर गावे।
ऋद्धि–सिद्धि, सुख–सम्पत्ति, जी भर के पावे।। **जय..........**

आरती
श्री कृष्ण जी
की

आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की
गले में बैजन्ती माला। बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला। नंद के आनन्द नन्दलाला।
नन्द के आनन्द मोहन बृजचंद परमानन्द राधिका रमण बिहारी की।।

गगन सम अंग कांति काली। राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली। भ्रमर सी अलक।
कस्तूरी तिलक चंद्र सी झलक। ललित छवि श्यामा प्यारी की।।
श्री गिरधर...........

कनकमय मोर मुकुट बिलसैं। देवता दर्शन को तरसैं।
गगन सौं सुमन बहुत बरसैं। बजे मुरचंग।
मधुर मिरदंग ग्वालनी संग। अतुल रति गोप कुमारी की।।
श्री गिरधर ....

जहाँ ते प्रकट भई गंगा। कलुष कलि हारिणी श्रीगंगा।
स्मरण से होत मोह भंगा। बसी शिव शीश जटा के बीच।
हरै अध कीच। चरण छवि श्री बनवारी की।।

श्री गिरधर ....

चमकती उज्ज्वल तट रेणू। बजा रहे वृन्दावन वेणू।
चहूँ दिशि गोपि ग्वाल धेनू। हँसत मृदु मंद चांदनी चंद।
कटत भव फन्द। टेर सुनो दीन भिखारी की।।

श्री गिरधर ....

आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की

आरती
श्री काली माता
की

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गाएं भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।

माता तेरे भक्त जनों पर भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।।
सौ सौ सिहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुःखियों के दुःख को निवारती। **ओ मैया.........**

माँ–बेटे का इस जग में है बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर ना, माता सुनी कुमाता।।

सब पे करुणा दरसाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती। **ओ मैया.........**

नहीं मांगते धन और दौलत, ना चांदी ना सोना।
हम तो मांगे तेरे मन का एक छोटा सा कोना।।

सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती। **ओ मैया.........**
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
वरद हस्त सर पर रख दो माँ संकट हरने वाली।।

माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती। **ओ मैया.........**

श्री देवी–वन्दना

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

आरती
श्री दुर्गा जी
की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।। **जय.......**

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको।। **जय.......**

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे।
रक्त–पुष्प गल माला, कण्ठ पर साजे।। **जय.......**

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर–नर–मुनि–जन सेवत, तिनके दुःखहारी।। **जय.......**

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, समराजत ज्योति।। **जय.......**

शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। **जय.......**

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भय हीन करे।। **जय.......**
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। **जय.......**

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू।। **जय.......**

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्त्ता, सुख सम्पत्ति करता।। **जय.......**

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्राधारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।। **जय.......**

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।। **जय.......**

श्री अम्बा जी की आरती जो कोई नर गाबे।
करत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावे।।

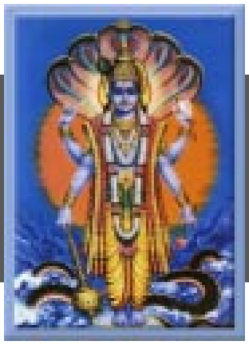

आरती
श्री विष्णु जी
की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ **जय......**

मातपिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ जिसकी।। ॐ **जय......**

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ **जय......**

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। ॐ **जय......**

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।। ॐ **जय......**

दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ **जय......**
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ॐ **जय......**

तन–मन–धन सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।।
जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।।

श्री विष्णु स्तुति

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।